05.01.77 की अव्यक्त वाणी

पर आधारित योग अनुभूति

त्यागी और तपस्वी बन सदा पास होने का अनुभव

➢➢ त्यागी और तपस्वी

➳ _ ➳ देह सहित देह के सर्व संबंधो का त्याग करना

→ मैं आत्मा स्थूल देह को छोड़ प्रकाश के शरीर को धारण करती हूँ

→ उड़ चलती हूँ सफेद प्रकाश की दुनिया में

→ अव्यक्त वतन में अव्यक्त बापदादा के सामने बैठ जाती हूँ

→ बापदादा के प्रकाशमय काया से दिव्य प्रकाश निकल रही हूँ

→ मुझ आत्मा के प्रकाश के शरीर को और भी चमकीला बना रहा है

→ मैं आत्मा देहभान से मुक्त हो रही हूँ

→ पुराने देह के भान से विस्मृत होकर एक सुन्दर फरिश्ते स्वरुप में चमक रही हूँ

■ ये देह नश्वर है

■ देह के सब सम्बन्ध नश्वर हैं

■ देह के पुराने स्वभाव-संस्कार ओझल हो रहे हैं

■ देह भान का त्याग करते ही मुझ आत्मा का देह के संबंधों से ममत्व मिट रहा है

■ नए, पवित्र, स्वर्णिम युग के संस्कार अंकुरित हो रहे हैं

■ बाबा की रूहानी दृष्टि, स्नेह भरी दृष्टि से मैं फरिश्ता देह की स्मृति से न्यारी और बाबा की दुलारी बन गई हूँ

→ बाब ये तन-मन-धन सब कुछ आपको समर्पित करती हूँ

→ देह सहित देह के सर्व संबंधो का त्याग करती हूँ

→ देह के संबंधों से ममत्व मिट रहा है

→ मैं आत्मा बुद्धि से लौकिक अलौकिक संबंधों का त्याग कर रही हूं

→ लौकिक अलौकिक संबंधों के मोह को नष्ट कर नष्टमोहा बन गई हूं

→ महात्यागी बन गई हूं

■ त्याग की हुई पुराने तन-मन-धन को संकल्प द्वारा भी फिर से वापिस नहीं लूंगी

■ बुद्धि द्वारा फिर से कभी भी इस पुराने घर में आकर्षित नहीं होंगी

■ संकल्प द्वारा भी फिर से इस पुराने शरीर में वापिस नहीं आऊंगी

■ स्वयं को मेहमान समझ आजाती हूँ कर्मक्षेत्र में

➳ _ ➳ विश्वकल्याणकारी स्थिति

→ मैं और मेरापन को त्याग कर अब निस्वार्थ सेवाधारी बन गई

- बाबा के साथ रहकर बाप के मददगार बनता जा रहा हूँ
- मैं आत्मा विश्व का आधारमूर्त उद्धारमूर्त हूँ
- अनेकों का उद्धार कर रहा हूँ
- सारे विश्व को मुक्ति - जीवन मुक्ति सकाश दे रहा हूँ
- बाप के साथ भक्तों को ब्राहमण बना कर भक्तों की रक्षा कर रहा हूँ
- इन्सोलवेन्ट को सोलवेन्ट बना रहे है
- कंगाल से सिरताज बना रहा हूँ
- महा तपस्वि बन सदा बाबा के पास रह कर कर्म करते पासवित्तओणर बन रही हूँ
- विश्वकल्याणकारी सो विश्वराज्याधिकारी बन रही हूँ